卐 श्री महावीराय नमः 卐

श्री परम पूज्य १०८ मुनि आदीसागर जी महाराज की

卐 पूजा 卐

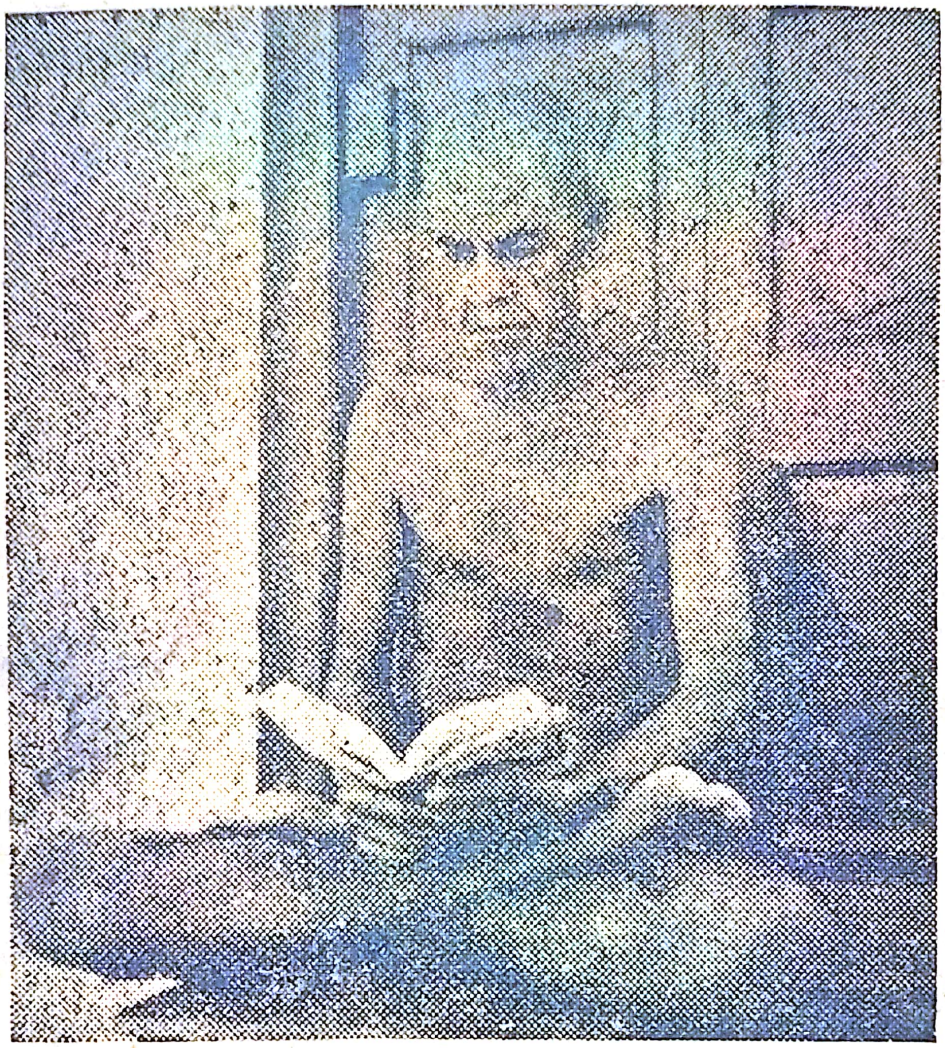

लेखक—सेठ माणिकचन्द जैन "निर्मल"

मु० पो० बांसा (तारखेड़ा) दमोह म० प्र०

सिंघई नवीनचन्द्र, निवारनचन्द्र जैन, कपड़ा दुकान पनागर

श्रीमान् दुलीचन्द्र, हजारीलाल गोटिया, पनागर

की ओर से सादर वितरित

कविता

अंतर विषे वासना बरतत
बाहर लोक लाज भय भारी
ताते परम दिगम्बर मुद्रा
धर नहिं सकें दीन संसारी ॥

ऐसे दुर्द्धर नग्न परीषह
जीतें साधु शीलवृत धारी
निर्विकार बालक वत् निर्भय
तिनके पाईन धोक हमारी ।

प्रकाशक—
ब्र० नाथूराम जैन
वरायठा ।

पूज्य मुनि १०८ आदि सागर जी महाराज की

संक्षिप्त जीवन झांकी

आपका जन्म बुन्देलखंड के अन्तर्गत बम्हौरी ग्राम में मिती कार्तिक गुदी २ विक्रम सं० १९४१ में हुआ था। आपके पिता जी का नाम गोपालदास व्या था, और माता का नाम लटकारी था आप गोला पूर्व चोसरा वंश के सुयोग्य जैन हैं। आपके आजा का नाम वहोरेलाल था। उनके यहां गोपालदास नन्हेंलाल, हलकाई, हजारीलाल और बारेलाल आदि ५ पुत्र थे। आप भी अपने ४ भाइयों में से मझले भाई हैं। भाइयों के नाम इस प्रकार हैं खूबचन्द, खुमान, मोतीलाल और छोटेलाल। आपका विवाह सं० १९५५ में १४ वर्ष की आयु में सरखड़ी में हुआ था। आप बचपन से ही सदाचारी थे। विवाह के समय से दो बार भोजन करना रात्रि को पानी

तक नहीं लेना और पूजन करने का आपका नियम था। आपने अध्ययन किसी पाठशाला में नहीं किया। निज का अनुभव ही कार्यकारी हुआ है। आप घी, धातु, गल्ला और कपड़ा का व्यापार करते थे। आपके सुयोग्य दो पुत्र हैं जो कि चिंतामन और धर्मचन्द बम्होरी में रहते हैं। आपके वंश द्वारा रेशंदीगिर के उद्धार का कार्य हुआ है। ऐसा जैन मित्र से ज्ञात हुआ है कि आपके पूर्वजों ने यहां जंगली झाड़ियां सफाई कराके नैनागिर क्षेत्र को प्रकाश में लाया था, फिर आपके द्वारा तो पूर्ण उद्धार हुआ है। पंच कल्याणक, गजरथ आदि बड़े मेले तो आपके प्रयत्न के सफल नमूने हैं। क्षेत्र की उन्नति करना आपका मामूली कार्य नहीं था बल्कि कठोर त्याग का फल था आपको बचपन में खुमान कहा करते थे और भविष्य में तो मान खोने वाले ही निकले। आपने मिती ज्येष्ठ सुदी ५ सं० १९८४ को द्रोणगिर में मुनि अनंतसागर और शांतिसागर महाराज क्षाणी से दूसरी प्रतिमा ली थी तब आपका नाम ब्र० खेमचन्द रखा। मिती अषाढ़ वदी ८ स० १९९५ में अंजड़ बड़वानी में मुनि सुधर्म सागर जी से ७ वीं प्रतिमा ली थी। फिर सागर में माघ मास के पर्यूषण पर्व सं० २००० में दशवीं प्रतिमा धारण की थी। सं० २००१ से वर्णी गणेशप्रसाद जी के संघ में रहकर जबलपुर में वीर जयन्ती पर वीर प्रभू के समक्ष क्षुल्लक दीक्षा ली और आपका नाम क्षु० क्षेमसागर रखा गया आपने क्षुल्लक दीक्षा से ही केश लोंच करना चालू कर दिया था। वर्णी जी तो आपके चरित्र की प्रशंसा किया ही करते हैं। इसके पश्चात् आपने सं० २०१२ को श्री रेशंदीगिर गजरथ के दीक्षा कल्याणक के दिन भगवान आदीनाथ के दीक्षा समय भगवान आदीनाथ के समक्ष मुनि

दीक्षा धारण की तब उसी दिन मिती माघ सुदी १५ शनिवार को आपका नाम मुनि आदि सागर रखा गया। यह है आपकी संक्षिप्त जीवन झांकी। इसे पढ़कर पाठकगण अवश्य ही पुण्य उपार्जन करने का प्रयास करें।

मुनि पद धारण करने के उपरान्त प्रथम चातुर्मास जबलपुर में हुआ और जबलपुर के आसपास के ग्रामों में विहार कर धर्मोपदेश दिया जिससे जैनेतर लोगों पर उपदेश का अच्छा असर हुआ जिसके फलस्वरूप बहुत से लोगों ने सप्त व्यसन का त्याग किया और अनेक व्रत लिये। महाराज के साथ श्री ब्र० नाथूराम जी बरायठा वाले वैयावृत कर धर्म लाभ उठा रहे हैं।

॥ भजन ॥

श्री आदिसागर मुनिवर तुमको लाखों प्रणाम,
श्री पंच महाव्रत धारी तुमको लाखों प्रणाम।
श्री अट्ठाईं मूलगुण धारी तुमको लाखों प्रणाम,
श्री गोपाल व्या के हो राजदुलारे तुमको लाखों प्रणाम।
मां लटकारी की आंखों के तारे तुमको लाखों प्रणाम,
बुंदेलखंड के हो उजयारे तुमको लाखों प्रणाम।
छोड़ा ग्राम बम्हौरी तुमको लाखों प्रणाम,
चिन्तामन से ममता टोरी तुमको लाखों प्रणाम।
नैनागिर जी में ध्यान जमाया घोर तपस्या कर सुख पाया, ॥तु०॥
परवत पर चौबीसी पधराई मानों स्वर्गपुरी सी लागी,
देश देश से यात्री आवें दर्शन कर सुख पावें ॥तुमको०॥
आयो नाथूराम शरण तुम्हारी जग दुःखों से लेहु निकारी,
पतितों के हो उद्धारी तुमको लाखों प्रणाम।
श्री आदीश्वर गुरुवर तुमको लाखों प्रणाम ॥

जय बोलो श्री आदीसागर महाराज की जय

क्षमावीरस्य भूषणम्

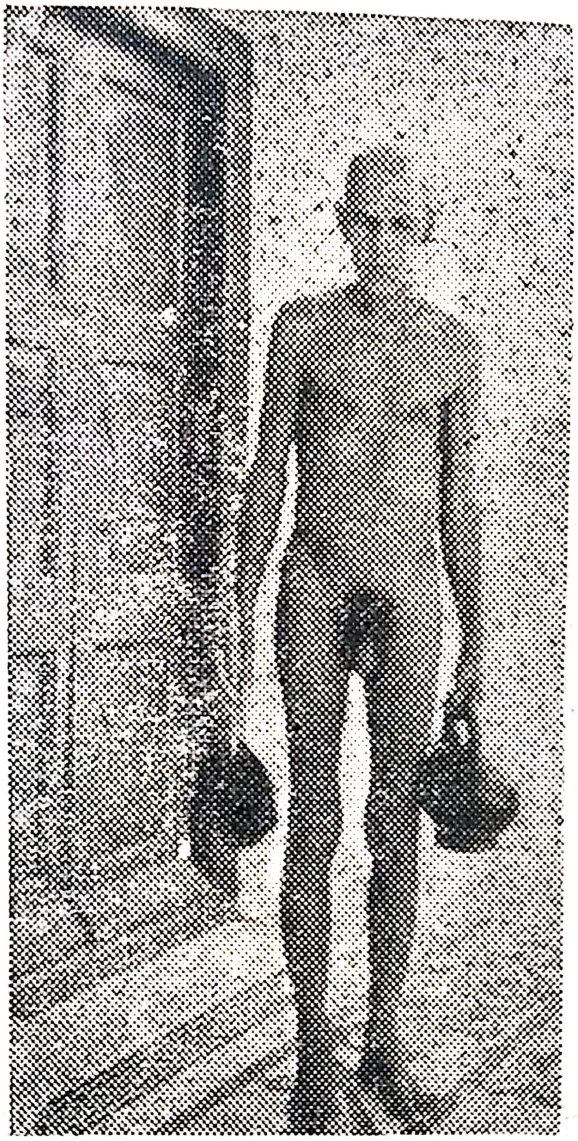

१०८ मुनि आदीसागर जी महाराज

Scanned with OKEN Scanner

卐 श्री महावीरायनमः 卐

पूज्य १०८ श्री आदीसागर जी पूजा प्रारम्भ

लटकारी की कूंख बसे सुखकार जू
ग्राम बम्होरी जन्म पिता गोपाल जू
बंश चौसरा जान राग सब त्यागियो
भेष दिगंबर धार आदीसागर जयो ॥

ओम् ह्रीं श्री १०८ मुनि आदीसागर २८ मूल गुण सहित अत्र अवतर अवतर संवौषट् ।

ओम् ह्रीं श्री १०८ मुनि आदीसागर २८ मूल गुण सहित अत्र तिष्ठः तिष्ठः ठा ठः स्थापनं ।

ओम् ह्रीं श्री १०८ मुनि आदीसागर २८ मूल गुण सहित मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

अष्टकः—ले नदी कूप का नीर प्रासुक भर लाऊं
भवसागर से कर तीर तुम पद हर्षाऊं
जय आदीसागर ईश तुम पद पूज करौं
गुणधारी अट्ठाईस भव दुख दूर करौ ।

ओम् ह्रीं श्री १०८ मुनि आदीसागर २८ मूल गुण सहित जन्म मृत्यु विनाशनाय जलं ॥ नि०

मलयागिर चंदन सार केशर घिस लायो
भव की आताप निवार तुम चरणन आयो ॥
जय आदीसागर ईश तुम पद पूज करौं
गुणधारी अट्ठाईस भव दुख दूर करौ

ओम् ह्रीं श्री १०८ मुनि आदीसागर २८ मूल गुण सहित संसार तापविनाशनाय सुगंधं ।न० ॥२॥

तन्दुल की जाति अनेक सो तुम जानत हो
अक्षय पदवी के हेत पूजा ठानत हो ॥
जय आदीसागर ईश तुम पद पूज करौं
गुणधारी अट्ठाईस भव दुख दूर करौ ॥

ओम् ह्रीं श्री १०८ मुनि आदीसागर २८ मूल गुण सहित अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतं नि० ॥३॥

तन्दुल केशर कर संग पीत वर्ण धारे
कर काम वाण को भंग तुम पद ले ठाड़े
जय आदीसागर ईश तुम पद पूज करौं
गुणधारी अट्ठाईस भव दुख दूर करौ ॥

Scanned with OKEN Scanner

ओम् ह्रीं श्री १०८ मुनि आदीसागर २८ मूल गुण सहित काम विध्वंसनाय पुष्पं नि० ॥४॥

श्रीफल की चिटक बनाय ता नैवेद्य कही
सब क्षुधा रोग नश जाय अचरज एक यही
जय आदीसागर ईश तुम पद पूज करौं
गुणधारी अट्ठाईस भव दुख दूर करौ ॥

ओम् ह्रीं श्री।१०८ मुनि आदीसागर २८ मूल गुण सहित क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्य नि० ॥५॥

रत्नों के दीपक नाहिं तातें चिटक रंगी
तुम चरणों के ढिंग माहिं भागे मोह अरी
जय आदीसागर ईश तुम पद पूज करौं
गुणधारी अट्ठाईस भव दुख दूर करौं।

ओम् ह्रीं श्री १०८ मुनि आदीसागर २८ मूल गुण सहित मोहांधकार विनाशनाय दीपं ॥६॥

चंदन चूरण करवाय तुम तट खेवत हैं
कर्मों की वाधा जाय याते सेवत हैं ॥टे०
जय आदीसागर ईश तुम पद पूज करौं
गुणधारी अट्ठाईस भव दुख दूर करौ

ओम् ह्रीं श्री १०८ मुनि आदीसागर २८ मूल गुण सहित अष्ट कर्म विध्वंशनाय धूपं नि० ॥७॥

ले ऐला लौंग बदाम श्रीफल भेंट करौं ।
विधि से कीजे विश्राम ऐसी चाह धरौ ॥टेह॥
जय आदीसागर ईश तुम पद पूज करौं
गुणधारी अट्ठाईस भव दुख दूर करौ ॥

ओम ह्रीं श्री १०८ मुनि आदीसागर २८ मूल गुण सहित मोक्ष फल प्राप्ताय फलं नि० ॥८॥

जल चन्दन अक्षय पुष्प नेवज तुरत बना ।
ले दीप धूप फल मिष्ठ अर्चत मोक्ष पदा ॥
जय आदीसागर ईश तुम पद पूज करौं
गुणधारी अट्ठाईस भव दुख दूर करौं

ओम् ह्रीं श्री १०८ मुनि आदीसागर २८ मूल गुण सहित अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घं नि० ॥९॥

—जय माला—

दोहा—छह काया रक्षा करें धार दिगम्बर भेष,
ऐसे श्री मुनि राज के बंदू चरण हमेश।

पद्धरी छंद—जय २ आदी सागर मुनीश,
गुणधारी बंदों आठ बीस।
जय पंच समिति पाले महान,
षट काया के रक्षक सुजान ॥१॥

जय २ महिमा धारी अपार,
जय मोक्ष पंथ के चलन हार।
जय जय संयम पालें अनूप,
जय आतम अनुभव निज स्वरूप ॥२॥

जय लेंय शुद्ध आहार खड़े,
सब जीवन के अनुराग बड़े।
जय मधुर आप उपदेश देत,
भव्य जीवों के कल्याण हेत ॥३॥

जय तरें आप तारें सुजान,
ऐसी महिमा तुम गुण निधान।
जय बालपने का धरा नाम,
तुमको कहते सबही खुमान ॥ ४ ॥

जब गृह धन्धा को किया बंद,
प्रतिमा धारी श्री खेमचन्द।
फिर बढ़े चढ़े निज के विचार,
उपदेश दिया करते बिहार ॥ ५ ॥

जय क्षुल्लक पदधारी महान,
श्री हुये क्षेम सागर सुजान।
जय वरदत्तादि मुनीश जान,
श्री रेशंदीगिर मुक्ति थान ॥ ६ ॥

दीक्षा कल्याणक आदिनाथ,
मन वचन काय से झुका माथ।
चादर से ममता दई तोड़,
होकर विराग कोपीन छोड़ ॥ ७ ॥

हर्षित जनता यह दृश्य देख,
अब हुआ दिगम्बर आप भेष।
जय जय आदी सागर महान,
सब जय २ शब्द करें सुजान ॥ ८ ॥

ऐसे गुरू की जय माल गाय,
गुरु चरणों में सिर नाय नाय
ऐसे गुरू का सत्संग रहे
"निर्मल" चरणों में ध्यान रहे ॥ ९ ॥

धत्ता:—मथुरा नन्दन तुम गुण वन्दन
आनन्द रंजन शिव गामी
सब पाप हरीजे 'निर्मल' कीजे
जै सदगुण दीजे हे स्वामी

ओम् ह्री श्री १०८ मुनि आदीसागर २८ मूल गुण सहित अनर्घ पद प्राप्ताय पूर्ण अर्घं ॥नि०॥

दोहा:—श्री आदीश मुनीश की पूजा करी बनाय।
गुरू भक्ति की लगन से दीजे पाप नशाय ॥

卐 स्तुति गुरु भक्ति 卐

भव तारण तरण जिहाज, आदि महाराज
अर्ज सुन लीजे, चरणों की सेवा दीजे ! टेक

तुम जैन धर्म के ज्ञाता हो, सब जीवों के अवत्राता हो
तुम वन्दन करत त्रिकाल मिटे भव जाल,
कर्म सब छीजे, चरणों की सेवा दीजे ! भव०

भव २ के गोते खाये हैं, गुरु शरण तिहारी आये हैं,
गुरु दीजे शुभ उपदेश मिटे भव क्लेश
आत्म रस भींजें, चरणों की सेवा दीजे ! भव०

तुम महा वैद्य कहलाते हो अमृत औषधि पिलवाते हो
जाते भव भव की दाह, मिटे सब आह
व्याधि हर लीजे, चरणों की सेवा दीजे ! भव०

श्री आदीसागर स्वामी हो, दुःख मेटो अंतरयामी हो
'निर्मल' मुक्ति का पंथ जैन का संत
दिखा कर रीझे, चरणों की सेवा दीजे ! भव०

बोलिये आदीसागर महाराज की जय

॥ इति ॥